परास्नातक संस्कृत कार्यक्रम (एम.ए.संस्कृत)
(एम.एस.के.)

सत्रीय कार्य (**Assignment**)

(जुलाई, 2024 एवं जनवरी, 2025 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : **MSK-005**
वैदिक वाड्.मय एवं भारतीय संस्कृति और सभ्यता

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

परास्नातक संस्कृत कार्यक्रम (एम.ए.संस्कृत)
(एम.एस.के.)

वैदिक वाड्.मय एवं भारतीय संस्कृति और सभ्यता
सत्रीय कार्य (2024–25)

पाठ्यक्रम कोड : MSK-005/2024-25

प्रिय छात्रों/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य है, इसके लिए 100 अंक निर्धारित हैं। इस सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जॉच स्तरीय कार्यक्रम का उद्देश्य यह जॉचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं, इसी का मूल्यांकन करना इस सत्रीय कार्य का उद्देश्य है, यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है बल्कि अध्ययन के दौरान जो कुछ सिखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें। यह उद्देश्य है।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये–

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे प्रदर्शित है:

अनुक्रमांक :..
नाम :..
पता :...

पाठ्यक्रम का नाम/कोड :........................
सत्रीय कार्य कोड :.......................................
अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड :...................................
दिनांक :..

3) उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का प्रयोग करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
4) प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
5) सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निम्न निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अन्तिम तिथि :

जुलाई 2024 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2025
जनवरी 2025 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2025

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश :

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगाः

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। पुनः इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी महत्वपूर्ण बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए तथा प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक और टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।
3. यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :
   क) आपका उत्तर तार्किक एवं क्रमबद्ध हो।
   ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्टता हो।
   ग) दिया गया उत्तर आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
   घ) कोई भी उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक न हो।
   ड.) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों।
4. **प्रस्तुतिः** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएं, तो उसको साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।
5. **विशेषः** अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं होगी।

सत्रीय कार्य

MSK: 005 वैदिक वाङ्मय एवं भारतीय संस्कृति और सभ्यता

पाठ्यक्रम कोड – MSK–005
पाठ्यक्रम शीर्षक – वैदिक वाङ्मय एवं भारतीय संस्कृति और सभ्यता
सत्रीय कार्य – MSK – 005/TMA/2024–2025
पूर्णांक – 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

1. **अधोलिखित की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :** 15X3= 45

(क) अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम्।
आस्थाद्रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः।।

अथवा

अस्मै ग्रामाय प्रदिशश्चतस्र ऊर्ज सुभूतं स्वस्ति सविता नः कृणोतु।
अशत्रिन्द्रो अभयं नः कृणोत्वन्यत्र राज्ञामभि यातु मन्युः।।

(ख) यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने।
यत्राधिसूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

अथवा

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत् प्रकेतः।
आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास।।

(ग) नासदासीन्नो सदासीत् तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम् ।।

अथवा

शिक्षा व्याकरण धन्दों निरूक्तं ज्योतिषं तथा ।
कल्पश्चेति षडड्.गनि वेदस्या हुर्मनीषिणः ।।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखिए। 7X5= 35

2. वैदिक संहिताओं का परिचय दीजिए।
3. ब्राह्मण ग्रंथों के प्रतिपाद्य को स्पष्ट करें।
4. उपनिषद के रचनाकाल पर प्रकाश डालिए।
5. वैदिक संहिताओं के प्रमुख भाष्यकारों पर प्रकाश डालिए।
6. अरण्यकों का परिचय देते हुए उनकी विषयवस्तु को स्पष्ट करें।
7. सोमयाज्ञ पर संक्षेप में प्रकाश डालें।
8. वेदों के काल निर्धारण पर प्रकाश डालें।

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए। 10X2= 20

9. वैदिककालीन राजनीतिक जीवन पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालें।
10. शिक्षा ग्रंथों का वर्णन करते हुए चारों वेदों के शिक्षा ग्रंथ पर प्रकाश डालें।
11. वेदांग किसे कहते हैं? वेदांगों को स्पष्ट करते हुए उनके महत्व पर विस्तृत रूप से लिखें।